मॉडल - उत्तर (AU - 6808) ①

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

बी० ए० / बी० एस० सी० / बी० एस० डब्लू० (प्रथम सेमेस्टर)

परीक्षा, 2014

विषय ! हिन्दी भाषा-I प्रश्न-पत्र (आधार पाठ्यक्रम)

प्रश्न 1 → प्रथम प्रश्न अनिवार्य है।

(i) कुलदेवता 'देवान' की आराधना 'बस्तर में बाध' से लिया गया।

(ii) 'पूअर लिटिल थिंक' कोसी की दयनीय (मृत्यु) स्थिति को देखकर 'एड' ने कहा।

(iii) "नाच न जाने आँगन टेढ़ा" का अर्थ है अपनी कमी होना मगर आरोप दूसरे पर थोपना।

वाक्य प्रयोग — सुरेश को प्रश्नों के उत्तर तो आते नहीं थे, बहाना बना रहा था कि पेन ठीक नहीं। नाच न आवे, आँगन टेढ़ा।

(iv) 'कुशाग्र' — तेज बुद्धि, 'कृतघ्न' — एहसान को न मानना।

(v) 'देवनागरी' लिपि का विकास ब्राह्मी, कुटिल, गुप्त, अक्षरात्मक लिपि से हुआ है।

(vi) क्ष, त्र, श्र, देवनागरी लिपि के संयुक्त व्यंजन है।

(vii) जुम्मन शेख और अलगू चौधरी के बीच गहरी मित्रता का संबंध है।

(iii) 'खाला' का अर्थ मौसी है।

(IX) जल – पानी, नीर, पय, उदक, अप, सलिल।
अग्नि – आग, पावक, अनल, जातवेद, कृशानू।

(X) 'नशा' कहानी का नायक ईश्वरी, प्रेमचंद, गरीब वलर्क का बेटा।

लघु उत्तरीय प्रश्न

2. * हिन्दी भाषा की वर्णमाला जिस लिपि में लिखि जाती है, उसका नाम देवनागरी लिपि है।
* आधुनिक मशीन उपकरणों – टंकण, आद्युलिपि, कंप्यूटर आदि के प्रयोग के अनुरूप हिन्दी वर्णमाला का मानकीकरण किया गया।
* एकरूपता, सरलीकरण, वैज्ञानिकता आदि माध्यम से मानकीकरण किया जाता है।
* वह व्याकरणसम्मत होती है, वह सर्वमान्य होती है, उसमें क्षेत्रीय अथवा स्थानीय प्रयोगों से बचने की प्रवृत्ति होती है अर्थात वह एक रूप होती है, वह सुस्पष्ट, सुनिर्धारित एवं सुनिश्चित होती है, वह नवीन आवश्यकताओं के अनुरूप निरन्तर विकसित होती रहती है, नये शब्दों के ग्रहण और निर्माण में वह समर्थ होती है, वह परिनिष्ठित, साध्यु एवं सम्भ्रान्त होती है। आदि।

3. * किसी भी समय के समाज को जानने के लिए साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी को आधार बनाकर पल्लवित कीजिए।

1. * पल्लव उत्पन्न करना अर्थात् विषय का विस्तार करना।
* गहन अध्ययनशीलता, सूक्ष्म निरीक्षण, तार्किकता, तटस्थता, व्याख्या शक्ति सम्पन्न होना चाहिए, भाषाधिकार, मेधावी होना, अभ्यास, स्पष्टीकरण, भावार्थ, आशय आदि।

5. * प्रेषक और तिथि, मूल संबोधन, अभिवादन या शिष्टाचार, गौण संबोधन, विषय-वस्तु, अधोलेख या पत्र की समाप्ति।

6. * अनुवाद — एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना ही अनुवाद है। या पुनकथन।
* राष्ट्रीय एकता में अनुवाद का महत्व, सामासिक संस्कृति के विकास में अनुवाद का महत्व, भारतीय साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्व, अंतरराष्ट्रीय साहित्य के अध्ययन-अध्यापन में अनुवाद का महत्व, तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्व, व्यवसाय के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व, जन-संचार माध्यमों में अनुवाद का महत्व, शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व आदि।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

7. * अलगू चौधरी का चरित्र-चित्रण — ईमानदार, मददगार, विवेकशील, कर्मठ, न्यायकर्ता, दयावान, संयमशील, मिलनसार, नेतृत्वकर्ता, अधिकार के प्रति सचेत आदि।

8. * लोकोक्ति — लोकोक्ति को कहावत वाक्य कहते हैं।
अर्थात् 'कही हुई बात'

केवल उसी बात को कहावत कहा जायेगा, जिसमें अनुभवों को संक्षिप्त एवं विलक्षण ढंग से व्यक्त किया गया हो और वह समय की कसौटी पर खरी उतरती हो।

* मुहावरा – विलक्षण अर्थ देने वाले वाक्यांश। जो वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को न बताकर, विशेष अर्थ को बतलाता है। मुहावरा कहलाता है।

* मुहावरा पूरा वाक्य न होकर वाक्य का एक अंश होता है। परन्तु लोकोक्ति में कही हुई बात अधिक विस्तारपूर्वक होती है।, मुहावरा का प्रयोग स्वतन्त्र रूप से नहीं होता, वाक्यों के मध्य में ही इनका प्रयोग होता है, जबकि लोकोक्ति में ऐसा नहीं है, लोकोक्ति मुहावरा से देखने में बड़ी होती है और यह किसी प्रसंगिक घटना पर आधारित होती है & आदि।

9.* नशा कहानी से लिया गया है जिसके लेखक प्रेमचंद है। आज के समय में जिस व्यक्ति के पास जितना सामर्थ्य या ताकत है वह उसी के अनुरूप मान-सम्मान प्राप्त कर सकता है। सभी मनुष्य बराबर नहीं होते, छोटे बड़े। हमेशा होते रहते हैं। ये सारी दलीलें बेमानी है।

10.* 'भोलाराम का जीव' कहानी का सार लिखना है और इसमें भ्रष्टाचार को लेकर जो व्यंग्य किया गया है उसका भी चित्रण करना है।

संतोष कुमार बघेल
सहायक प्राध्यापक (तदर्थ)

①

गुरु घासीदास विश्व विद्यालय, बिलासपुर छ.ग.

मुख्य परीक्षा – 2014-15

AU - 6684

प्रतिदर्श उत्तर पत्र

B.A./B.Sc./B.S.W.(Hons) प्रथम सेमेस्टर

प्रश्न. 1. निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए [अति लघु उत्तरीय प्रश्न]

उत्तर – 1. हिन्दी (देवनागरी लिपि), अंग्रेजी (रोमन लिपि)

2. ब्राह्मी, खरोष्ठी

3. अनुभवी होना → विजय ने घाट-घाट का पानी पिया है, उसे मूर्ख बनाना आसान नहीं है)

4. तरुच्छाया

5. चाँदनी – चंद्रिका, ज्योत्स्ना, कौमुदी, कुमुदकला

6. अनाच्छादित

7. चाक – चक्की, कुम्हार का चाक, चकवा, बवण्डर, गोल वस्तु

8. भूधर

9. माडिन नदी

10 – पंच परमेश्वर

[लघु उत्तरीय प्रश्न]

प्रश्न. संख्या - 2 - निम्न लिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

उत्तर - (i) 'बस्तर में बाप' (संस्मरण), गुलशेर, खाँ शानी (लेखक), कोसी की मृत्यु पर ये विचार, लेखक ने व्यक्त किया है। जीवन की निस्सारता तथा मृत्यु की सच्चाई को दिखाने का प्रयास किया गया है।

(ii) पंच परमेश्वर (पाठ), लेखक मुंशी प्रेमचंद। पूरे गाँव के साथ-2 अलगू चौधरी और जुम्मन शेख को ये समझ में आ जाता है कि पंच के पद पर बैठने वाला व्यक्ति निष्पक्ष न्याय देता है।

(iii) पल्लवन → प्रकृति ने संसार के अन्य जीव-जंतु से अधिक विवेकशील मनुष्य को बनाया है। अतः मनुष्य को इसकी महत्ता को समझना चाहिए। जीवन को व्यर्थ नहीं बनाना चाहिए।

(iv) संक्षेपण - "वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोष", शीर्षक को देते हुए एक-तिहाई

(3) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :—

(i) नशा कहानी के लेखक मुंशी प्रेमचंद, कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(ii) अवकाश हेतु औपचारिक पत्र विभागाध्यक्ष को लिखना है। उत्तर में दिनांक, सम्बोधन, विषय, मूल समस्या तथा पता इत्यादि सही जगह होना अपेक्षित है।

(iii) पारिभाषिक शब्दावली की परिभाषा, विशेषताएँ, महत्व वर्तमान दौर में बतलाना अपेक्षित है।

(iv) देवनागरी लिपि का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसके महत्व, विशेषताएँ नामकरण का आधार उत्तर में लिखें।

Vandana Tiwary

हिन्दी-भाषा

गुरुघासीदास विश्वविद्यालय ,बिलासपुर,(छ.ग.)

प्रतिदर्श उत्तर-पत्र - 2014-15

हिन्दी विभाग

कक्षा –~~एम.ए. (III सेमेस्टर)~~ B.Com. I Seme.   विषय :- ~~जनसंचार माध्यम~~ आधार पाठ्यक्रम, हिन्दी   विषय कोड :-~~302~~ AU.6640

उत्तर-1 - **(खंड -क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न**

क 'अरुणोदय', 'भोर' या 'प्रातःकाल' |

ख - 'गुलशेर खां शानी' |

ग- ताकतवर का ही अधिकार होना |

वाक्य-प्रयोग-"माननीय अब आप शांत रहें; सत्ता हमारी है,आपकी नहीं,तो जैसा हम चाहेंगे वैसा ही होगा |"

घ- 1-"कृपा या उपकार करने वाला"| 2- "की गयी कृपा या उपकार को न मानने वाला"|

ङ- "ब्रह्मीं लिपि से |

च- - भोला राम का जीव |

छ- 'गहरी-मित्रता'

ज- 'नशा'

झ-'मैं' या 'मुंशी प्रेमचंद्र' और 'ईश्वरी' |

ञ- 'पतन' |

(खंड-ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर -2-देवनागरी लिपि के उद्भव और विकास को समझाते हुए ब्राह्मीं-लिपि लिपि से इसके जन्म, इसका दो भागों- उत्तरी से 'नागरी' या 'देवनागरी' और दक्षिणी से 'नंदी-नागरी' में बटनें का उल्लेख करते हुए देवनागरी लिपि के मानक स्वरूप तक के इसके विकास को दर्शाना इस प्रश्न के उत्तर में अपेक्षित है |

उत्तर -3- दिए गए अंश को पल्लवित या व्याख्यायित करते हुए इस मंतव्य को अपने उत्तर के केंद्र में रखना उचित होगा की 'उद्दंड,हिंसक और अमानवीय व्यवहार करना मानवीय गुण नहीं हैं बल्कि पाशविक गुण हैं'

उत्तर -4 'कम्प्युटर में हिन्दी का अनुप्रयोग' विषय पर निबंध लिखते समय हिन्दी वर्णमाला के फॉण्ट और वर्तमान में की-बोर्ड निर्माण के प्रयास,शब्दावली,संकेत जैसे विविध पहलुओं को निबंध में समेटना आवश्याक होगा |

उत्तर -5- विभागाध्याक्ष को चरित्र-प्रमाण पत्र के लिए आवेदन-पत्र लिखते समय संबोधन, विषय ,दिनांक जैसे पत्र के आवश्यक अंगों को पत्र में शामिल करना अपेक्षित है |

उत्तर -6-पारिभाषिक शब्द अपने आप में विषय-सापेक्ष होते हुए भी निश्चित अर्थ में रूढ़ होते हैं |ऐसे शब्दों के के पर्याय उनके स्थानापन्न नहीं हो सकते,संयुक्त शब्द बनाकर अर्थविस्तार नहीं किया जा सकता ;इस तरह की विशेषताओं को उत्तर में शामिल करते हुए पारिभाषिक शब्दों के महत्त्व का उल्लेख करना आवश्यक है |

(खंड-ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न नोट

उत्तर -7–पंचपरमेश्वर कहानी में जुम्मन शेख की संवेदनशीलता, मित्रता,अहंकारी,और न्याय के प्रति उसकी निष्ठा तथा निष्पक्ष-न्याय को महत्त्व देने जैसी उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं को व्याख्यायित करना इस प्रश्न के उत्तर में अपेक्षित है |

उत्तर -8-इस प्रश्न के उत्तर में सन्दर्भ के अंतर्गत पाठ के अंश का संकेत, पाठ का नाम, उसके लेखक का नाम,और प्रसंग के अंतर्गत दिए गये अंश के आगे पीछे की घटनाओं का संकेत करते हुए व्याख्या शीर्षक के अंतर्गत कोसी की मृत्यु और बाघ के प्रति गाँव में फैले दहशत के माहौल को व्याख्यायित करना अपेक्षित है

उत्तर -9-हमारे समाज में फैले घूंसखोरी,ठीकेदारी,इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों के बाबुओं,अधिकारीयों द्वारा गरीबों के शोषण तथा भ्रष्टाचार की समस्याओं को इस व्यंग्य में हरिशंकर परसाई जी ने बड़े ही संवेदनशीलता और सजीवता से चित्रित किया है,जिसका उल्लेख उत्तर में होना आवश्यक है |

उत्तर -10- दो भाषाओं की जानकारी, दो संस्कृति की जानकारी,रोजगार के अवसर तथा राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक तथा सामाजिक संबंधों के अध्ययन जैसे इसके बहुआयामी महत्त्व को उत्तर में रेखांकित करना चाहिए|एक अच्छे अनुवादक की विशेषताओं के रूप में स्रोत-भाषा और लक्ष्य-भाषा दोनों में व्यवहृत समाज के रीति-रिवाज तीज-त्यौहार, मेले, उत्सव आदि सांस्कृतिक,राजनैतिक ऐतिहासिक तत्वों की जानकारी होनी चाहिए |

डॉ.राजेश मिश्र
सहायक प्राध्यापक (अस्थाई)

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ,बिलासपुर,(छ.ग.).

विषम सेमेस्टर परीक्षा - 2014-15

माडल -उत्तर

हिन्दी विभाग

कक्षा – बी.ए.एल.एल.बी.(प्रथम सेमेस्टर) विषय (आधार पाठ्यक्रम)

1-प्रतिष्ठा

2-क्ष, त्र ,ज्ञ

3-अग्नि= अनल, आग, पावक आदि

वायु= पवन, हवा ,समीर आदि

०4-आकाश=पाताल,दुःख=सुख,वैकल्पिक=अनिवार्य |

5- बहुत कठिन होना =राम की पढाई इसबार ठीक नहीं हुई है निश्चित ही उसके लिए इस बार के सारे पेपर टेढ़ी खीर ही होंगे |

6- अपनी आवश्यकताओं को अपनी कमाई के अनुसार ही बढ़ानी चाहिए |

7- 'प' वर्गीय व्यंजन ध्वनियाँ = प फ ब भ म |

8-'साल वनों के द्वीप'|

9- पर्यवेक्षण ,अभ्युत्थान ,सच्चिदानंद |

10- क ख ग घ ङ |

11- 11 (मूल स्वर =10) |

12- जिसका (दिए गएअंश की भाषा का) अनुवाद करना है उसे स्रोत-भाषा कहेंगे |

१३- ब्राह्मी/,कुटिल/,नागरी |

१४- भोला राम का जीव / सदाचार का ताबीज |

15- 1-अनुच्छेद/ धारा/ रिट आदि | 2- त्वरण/ प्लवन/ संलयन आदि

(खंड(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न -2 -देवनागरी लिपि ब्राह्मी, कुटिल, लोकनागरी, नगरी के कर्म से विकास करती हुई आज देवनागरी के मानक स्वरूप के रूप में हमें प्राप्त है |इसके विकास के विविध चरणों का परिचय देते हुए उतर में इसके मानक स्वरूप का ज़िक्र करना आवश्यक है |

प्रश्न -3-अपने पिता लो लिखे गए पत्र में दिनांक,अपनी स्थिति और अपना पता जैसे कुछ आवश्यक बिन्दुओं को ध्यान में रखना आवश्यक है |

प्रश्न -4-देवनागरी वर्णमाला के मानक स्वरूप में कल 10 मूलस्वर ,ऋ, और सरे व्यंजनोंका ज़िक्र करते हुए संयुक्त व्यंजनो आदि का उल्लेख होना चाहिए |

प्रश्न -5- औपचारिक पत्र कार्यालयी शिष्टाचार की आवश्यकता होती है अनौपचारिक पत्र में भावनाओं तथा संबंधों का ध्यान रखना आवश्यक है |दिनांक भवदीय विषय तथ्यों की जानकारी पाने वाले और भेजने वाले का नाम पद आदि औपचारिक पत्रों की विशेषताओं में आवश्यक हैं |अनुप्चारिक में दिनांक सम्बन्ध भावनाएं तथा विनम्र लेखन आवश्यक होता है|

प्रश्न -6-'नशा' कहानी में ईश्वरी के चरित्र-का चित्रण करते समय उत्तर में सामंती व्यवस्था का पोषक होने ,एक अच्छा मित्र होना ,गंभीर, तेज-बुद्धि जैसी विशेषताओं का उल्लेख करना चाहिये |

02

प्रश्न -7 - "भोलाराम का जीव "पाठ की व्यंग्यात्मक कथा में बोलाराम की गरीबी-लाचारी में उसकी मृत्यु, समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, कार्यालयों में कर्मचारियों के व्यवहार नारद की कार्यालय में दशा आदि का उल्लेख करना उत्तर में अपेक्षित है |

(खंड ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न -8 -पल्लवन की परिभाषा अर्थ,संक्षेपण की परिभाषा अर्थ,के साथ साथ दोनों के अंतर–जैसे पल्लवन में दिया गया अंश छोटा और सूक्ति या कथन रूप में होगा ,संक्षेपण करते समय दिए गए अंश का 1/3 भाग प्रस्तुत करना आदि को व्याख्यायित करना उत्तर में अपेक्षित है |

प्रश्न -9- कंप्यूटर में हिन्दी का अनुप्रयोग विषय पर निबंध लिखते समय हिन्दी वर्णमाला के 'की-बोर्ड' विकसित करने, शब्द रचना के लिए प्रयुक्त होने वाले आदेश या कमांड का उल्लेख,आदि का उल्लेख उत्तर में अपेक्षित है|

प्रश्न-10-इस प्रश्न के उत्तर में देवनागरी लिपि के स्वरूप (हिन्दी-वर्णमाला) संयुक्त व्यंजन, स्वर, संयुक्त स्वर आदि को स्पष्ट करते हुए इस लिपि की विशेषताओं का परिचय देना आवश्यक है |

प्रश्न-11-"पञ्च परमेश्वर" कहानी का शीर्षक न्याय के प्रतीक "पञ्च" का ईश्वर के समान निष्पक्ष न्याय करने के भाव को स्पष्ट करता है | इस कथा का शीर्षक अर्थपूर्ण और सारगर्भित है |कहानी का सारांश लिखते समय दोनो मित्रों का बारी-बारी से पञ्च बनने,स्थितियों के अनुसार सच्चाई का साथ देते हुए न्याय करने तथा दोस्ती का न्याय से कोई सम्बन्ध न होने के भाव को,(कथा के केंद्र में रखने के लेखकीय प्रयास को) उत्तर में उद्घाटित करना अपेक्षित है |

सहायक प्राध्यापक (अस्थाई)

मॉडल-उत्तर (AU-6682)

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर
बी० ए० (प्रथम सत्र) परीक्षा, 2014

विषय : हिन्दी (AU-6682)
प्रश्न-पत्र [हिन्दी भाषा का इतिहास-I (101)]

प्रश्न (1) निम्न लिखित सभी प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

(i) ध्वन्यात्मक लिपि से रोमन भाषा लिखि जाती है।

(ii) सूर, केसव, मंडन, बिहारी ...... बानी ह सों जानिए। भिखारीदास की पंक्ति है।

(iii) 'पंडिय सअल सत्य बक्खणअ देहहिं बुद्ध बसन्त ण जाणअ। सरहपा की पंक्ति है।

(iv) खड़ी बोली का अन्य नाम कौरवी या देहलवी है।

(v) 'नासिकेतोपाख्यान' सदल मिश्र की रचना है।

(vi) 'भोजपुरी' की उपभाषा बिहारी है।

(vii) बोली की भौगोलिक क्षेत्र प्राय: स्थानीय और सीमित होती है।

(viii) भारतीय संविधान में संघ की राजभाषा के अनुच्छेद का उल्लेख 343 (343-351) में है।

(ix) आठवीं अनुसूचि में विनिर्दिष्ट भारतीय भाषाओं की संख्या 22 है।

(x) 'मृगावती' कुतुबन की रचना है।

(2) लघु उत्तरीय प्रश्न।

(i) अपभ्रंश = भ्रष्ट हो, जिसका रूप बिगड़ा हो, च्युत, स्खलित, विकृत अथवा अशुद्ध। भाषा के सामान्य मानदंड से जो शब्द-रूप भ्रष्ट हों, वे अपभ्रंश हैं।

अपभ्रंश, अवहट्ठ और पुरानी हिन्दी का सम्बन्ध के बारे विभिन्न विद्वानों का मत बताते हुए अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी के सम्बन्ध को स्पष्ट करें।

(ii) अवधी = अवधी की उत्पत्ति पूर्वी हिन्दी के अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुई है इसे स्पष्ट करना है।

अवधी का महत्व इनकी विशेषताओं से स्पष्ट कीजिये :-

* अवधी भाषा - भाषियों की संख्या दो करोड़ के लगभग है।
* भारतीय - इतिहास में अत्यधिक महत्व है।
* बौद्धकाल में भी यह जनपद अत्यन्त महत्वपूर्ण था।
* प्रयाग, इलाहाबाद में गुप्त, मुगल तथा ब्रिटिश काल के समय तथा शिया नवाब ने अपनी शानशौकत तथा उच्च संस्कृति के लिए प्रसिद्ध थे।

(iii) सर्वसमावेशिता की विशेषता, वीरता और शौर्य, प्रारंभ में सामंती दरबारों में संगीत का सम्मान, संगीत का आनंद गेय पदों द्वारा लिया जाता, ध्रुपद के लिए ब्रजभाषा अनुकूल रही आदि विशेषता बताते हुये भक्तिकाल में कृष्ण भक्ति शाखा - सुरदास - सुरसागर, तुलसीदास - विनयपत्रिका, गीतावली, कवितावली, कृष्णगीतावली, मीराबाई, रसखान, अष्टछाप, निम्बार्क आदि के रचनाओं के माध्यम कैसे काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा का विकास हुआ इसका वर्णन करना है।

(iv) * आधुनिकता का आगमन के कारण
* राजनीतिक कारण
* फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना
* ईसाई मिशनरियों का योगदान
* सामाजिक सुधार आन्दोलन
* प्रेस की स्थापना आदि।

(3) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) खड़ी बोली, ब्रजभाषा, हरियाणी, बुन्देली, कनौजी, दखिनी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती, मालवी, कुमाउंनी, गढ़वाली, भोजपुरी, मगही, मैथिली। इन सभी बोलियों का वर्गीकरण बताते हुए किन-किन क्षेत्रों में प्रयोग की जाती है इसका उल्लेख करना है।

(ii) प्रमुख व्यक्ति — महर्षि दयानंद, स्वामी गणेशदत्त, महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, पं. मदन-मोहन मालवीय आदि।

प्रमुख संस्थान — नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग; दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, हिन्दुस्थान प्रचार सभा, वर्धा, हिन्दी विद्यापीठ, बंबई, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना आदि।

(iii) राजभाषा के संवैधानिक स्वरूप को स्पष्ट करने के भारतीय संविधान में दिये 343, 344 संघ की भाषा, 345, 346, 347 प्रादेशिक भाषाएँ, 348, 349 उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों ~~की~~ आदि की भाषा; 350, 351 विशेष निर्देश।
343 से 351 तक के संवैधानिक स्थिति को स्पष्ट करना।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय

मुख्य परीक्षा - 2014-15

प्रतिदर्श उत्तर-पत्र

B.A. (Hon's) Hindi (first Semester)

हिंदी साहित्य का इतिहास

Paper : 102

AU-6683

खण्ड - 'अ'

*सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं। 10x2 = 20

1. (i) 1929

(ii) छायावाद (आधुनिक-काल)

(iii) ग्रियर्सन

(iv) विश्वनाथ त्रिपाठी

(v) प्रेमचंद

(vi) आदिकाल

(vii) प्रेमचंद

(viii) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय

(ix) सगुण (रामभक्ति, कृष्ण भक्ति) निर्गुण (संत काव्य, सूफी काव्य)

(x) तीन

खण्ड - 'ब'

* किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 4x5 = 20

2. => साहित्य इतिहास संबंधित मान्यताएँ

=> रामचंद्र शुक्ल का

(3) => साहित्य इतिहास का परिचय

=> कृति
=> कर्ता
=> पद्धति
=> विषय (इन सभी आधार का विश्लेषण एवं उदाहरण)

(4) => भक्तिकाल का परिचय

=> सगुण और निर्गुण का कालक्रम सहित परिचय एवं मुख्य कवियों का नामोल्लेख एवं इनके ग्रंथों का परिचय (नामोल्लेख)

(5) => आधुनिक काल का अभिप्राय

=> प्रमुख कालखंडों और कवियों का परिचय

=> प्रमुख कालखंडों का ~~सीमा~~ समय-सीमा

(6) रीति शब्द का परिचय
रीति-सिद्ध का अभिप्राय
किसी का सामान्य परिचय

खण्ड - 'स'

* किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए । 2×10 = 20

(7) => भारतेन्दु युग की समय-सीमा का परिचय

=> भारतेन्दु युग के प्रमुख रचनाकार एवं उनके साहित्यिक अवदानों का उल्लेख

(8) => छायावादी युग का परिचय, समय-सीमा, प्रमुख कवि एवं

(9) => आदिकाल का शाब्दिक अर्थ

=> विभिन्न विद्वानों द्वारा सुझाए गए नाम ~~के~~ लक्षण एवं समय-सीमा ।

=> नामों के ~~ले~~ लेकर दिए गए आधार का विवरण ।

=> तर्क सम्मत निष्कर्ष ।

(समाप्त)

[signature]

कुन्दन कुमार पासवान

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ,बिलासपुर ,(छ .ग .)

प्रतिदर्श उत्तर- पत्र

हिन्दी विभाग

विषम सेमेस्टर परीक्षा - 2014-15

कक्षा –बी.ए. (iii सेमेस्टर) विषय :-पूर्वमध्यकालीन काव्य (भक्तिकाव्य) विषय कोड :- 302

AV-6691

क-"आरति कीजै हनुमान लला की ,दुष्ट दलन रघुनाथ कला की" यह आरती रामानंद ने लिखी है |

ख- वैष्णव-भक्ति का उदय दक्षिण भारत में हुआ था |

ग- 'विशिष्टाद्वैत' सम्प्रदाय की स्थापना रामानुजाचार्य ने की थी |

घ–मुल्ला-दाऊद की रचना का नाम चंदायन है |

ङ- पद्मावत में 'नागमती' को 'दुनिया-धंधा' माना गया है |

च- "अर्धकथानक" बनारसीदास की रचना है |

छ- "अलख-निरंजन" का अर्थ है- "कालिमा या दोषों से रहित निर्गुण निराकार ब्रह्म"

ज- हिन्दी में दोहा चौपाई की परंपरा अपभ्रंश और सरहपा से आरम्भ पाती है |

झ- संत कवियों में "सुन्दरदास" भली-भांति शिक्षित और काव्यकला निपुण कवि रहे हैं |

ञ- भक्तिकाल की समय सीमा-14 वीं शताब्दी से 17 वी शताब्दी के बीच| शुक्ल जी के अनुसार- "संवत 1375 से 1700" माना जाता है|

(खंड(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न -2 - सूरदास के भ्रमरगीत-प्रसंग की विशेषता में गोपियों की वाग्वैदग्ध्यता,विविध रागों में पद रचना,प्रेम का एकान्तिक-उहात्मक चित्रण,निर्गुण का खंडन और सगुण का मंडन आदि बिन्दुओं का उल्लेख उत्तर में आवश्यक है |

प्रश्न -3 "कबीर की 'आखिन-देखी' उनकी 'साखी' में सुरक्षित है"कथन का विश्लेषण करते समय उनके समय की सामाजिक सांस्कृतिक स्थितियों का उल्लेख करते हुए साखी से उदाहरण लेते हुए भाषा,आडम्बर की भावना साम्प्रदायिक वैमनस्यता विविध धर्म और वाद विवाद खंडन-मंडनकी प्रवित्ति के उल्लेख को उत्तर में देखा जायगा ||

प्रश्न -4- सगुन-भक्ति शाखा की प्रवित्तियों में अवतारी स्वरूप और लीलाओं का चित्रण,ईश्वर के लोकरंजकऔर लोकमंगल स्वरूप का चित्रण,नवधा-भक्ति,राग-रागिनियों में पद रचना आदि को उत्तर में समाहित करना आवश्यक है|

प्रश्न -5 जायसी के प्रेमाख्यानक 'पद्मावत' की विशेषताओं में बारहमासा वर्णन-शैली,मसनवी शैली का प्रयोग,भारतीय हिन्दू राजाओं के प्रेमाख्यान को सूफी सिद्धांतो से मिलाकर कथानक तैयार करना कथा रूढ़ियों और कवि-रूढ़ियों का प्रयोग, पात्रों के चरित्र का आध्यात्मिक स्वरूप निर्मित करने जैसी विशेषताओं का उल्लेख उत्तर में करना आवश्यक है |

प्रश्न -6 रामचरित मानस के सुन्दरकाण्ड की विशेषता में हनुमान के ओजपूर्ण और रामभक्त स्वरूप का चित्रण; विभीषण के चरित्र की विशेषता का चित्रण, राम-सेना का राम के प्रति समर्पण-भाव,प्रकृति-चित्रण,भाषा और अलंकार की विशेषता आदि तटों का उल्लेख उत्तर में अपेक्षित है |

(खंड ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न -7 - पद्मावत के दार्शनिक तत्वों में-कथा-पात्रों का आध्यात्मिक-रहस्यवादी स्वरूप-चित्रण,गुरु की महिमा,कथा-रूढ़ियों तथा कवि-रूढ़ियों का प्रयोग,लोक प्रचलित कथा से आध्यात्मिक रूपक तैयार करना,ईश्वर को

प्रियतम मानना ,संसार की निस्सारता आत्मा-परमात्मा के अद्वैत की स्थिति का प्रयास लौकिक प्रेम से अलौकिक प्रेम की व्याख्या शैतान आदि का उल्लेख करना आवश्यक है |

प्रश्न -8 - 'राम-काव्य परंपरा' पर संक्षिप्त निबंध लिखिए राम के स्वरूप और उनके चरित्र तथा कथा वर्णन की दृष्टि से रामानंद ,तुलसीदास आदि भक्त आचार्यों के राम काव्य की विशेषता स्पष्ट करना उत्तर में अपेक्षित है|

प्रश्न -9- सूफी-काव्य की प्रवित्तियों का सोदाहरण विवेचन करते समय बारहमासा वर्णन, प्रकृति का मानवीकरण,मसनवी शैली का प्रयोग,काव्य रूढ़ियों तथा कवि रूढ़ियों के प्रयोग को उत्तर में समाहित करना चाहिए |

प्रश्न-10-'सन्दर्भ सहित व्याख्या करें-"मन परतीति न प्रेम रस,ना इस तन में ढंग |क्या जानौं उस पीवसूं, कैसे रहसी रंग ||प्रीतम को पतियाँ लिखूँ, जो कहूँ होय बिदेस| तन में,मन में,नैन में,ताकौ कहा संदेश|| कबीर रेख सिन्दूर की काजल दियो न जाय |नैनू रमैया रमि रह्या दूजा कहाँ समाय || मन में ना तो प्रतीति आकर है इस कारन नातो प्रेमका रस हैऔर ना तो इस शरीर को परें व्यवहार का तरीका या ढंग ही मालूम है,क्या जानू मेरे उस प्रियतम का कैसा रूप-रंग है | मैं अपने उस प्रियतम को पात्र लिखती अगर वो विदेश में या हमसे दूर होता लेकिन जो मेरे मन में तन में आँखों में पहले से ही बसा है उसे सन्देश क्या भेजूं |कबीरदास जी कहते हैं की जब सिन्दूर की रेख (सुहागन,ईश्वरीय-सानिध्य की प्राप्ति)पहले ही लग चुकी है तो फिर से उस पर काजल (काला,काल.) कैसे लग सकता है| जब आँखों में समाहित होने वाला, रमण करने वाला पहले से ही बस चुका है तो फिर उसमें दूसरा कहाँ समा सकता है |

डॉ.राजेश मिश्र

सहायक प्राध्यापक (अस्थाई)

माडल उत्तर

शिक्षक

डॉ. रमेश गोहे

प्रश्न पत्र - AU-6694

विषय - हिन्दी कथा साहित्य (501)

कक्षा - बी०ए० पंचम सेमेस्टर

हिन्दी विभाग.

प्रश्न:-(I) अति लघुउत्तरीय प्रश्न

(i) अमृत राय (ii) 1915 ई. (iii) चन्द्रबाला घोष (iv) धनपतराय (vi) अरुण, मधुलिका (मुख्यपात्र) (v) कफन (vii) श्री निवासदास (viii) मन्नु भण्डारी (ix) गोदान (x) गोदान

प्रश्न (II) लघुउत्तरीय प्रश्न

(1) कहानी की विकास यात्रा → प्रेमचंद पूर्व युग, प्रेम चंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग
आरंभिक कहानियां → ग्यारह वर्ष का समय - रामचन्द्र शुक्ल, दुलाईवाली - बंग महिला, ग्राम - जयशंकर प्रसाद, राखीबंद भाई - वृन्दावनलाल वर्मा, उसने कहा था - चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, उलबहार - किशोरीलाल गोस्वामी, प्लेग की चुड़ैल - मास्टर भगवानदास

(2) हिन्दी उपन्यास का विकास - विकास यात्रा - प्रेमचंद पूर्व युग - मनोरंजन प्रधान उपन्यास, जासूसी उपन्यास, तिलस्मी ऐयारी उपन्यास, सामाजिक उपदेश प्रधान उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास
प्रेमचन्द युगीन उपन्यास - सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास, व्यक्तिवादी उपन्यास, मनोवैज्ञानिक उपन्यास
प्रेमचन्दोत्तर युग - सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास, प्रगतिवादी / सामाजिक उपन्यास, आंचलिक उपन्यास
मनोवैज्ञानिक उपन्यास, आधुनिकताबोध के उपन्यास, महिला लेखन की धारा, उत्तर आधुनिक उपन्यास
समकालीन उपन्यास

(3) कथा लेखन का शिल्प, ग्रामीण जन जीवन की समस्याओं का चित्रण, यथार्थ का चित्रण
किसान जीवन की समस्याओं का चित्रण, दलित जीवन की समस्याओं का चित्रण, सामाजिक विसंगतियों का चित्रण, विधवा समस्या, अनमेल विवाह, अछूतोद्धार, तथा अन्तर्द्वन्द्व इत्यादि।

(4) मैला आँचल और आँचलिकता, मैला आँचल का स्वरूप, मैला आँचल का कथ्य, सामाजिक जीवन का चित्रण, नारी का स्थान, सामाजिक मान्यताएँ, धार्मिक भ्रष्टाचार और विकृतियां, अंधविश्वास की मानसिकता, आर्थिक जीवन, राजनीतिक पक्ष, सांस्कृतिक, चित्रण, राजनीतिक चित्रण एवं चेतना।.

(5) महाभोज - का प्रतिपाद्य एवं कथ्य, मूल समस्या - राजनीतिक विकृति, स्वाधीनता ~~[illegible]~~ के बाद का लोकतंत्र, आम आदमी समानता, स्वतन्त्रता, न्याय जैसे मूल्य, जातीय संघर्ष और गाँव-शहर का द्वन्द्व, पत्रकारिता का वास्तविक चरित्र उद्घाटन बौद्धिक वर्ग का चित्रण, अनुसंधान का चित्रण, महाभोज का शिल्प आदि।

प्रश्न(III) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) दिव्या में व्यक्त स्त्री समस्या का चित्रण, नारी स्वतन्त्रता, सार्थकता का द्वन्द्व, कथ्य / संवेदना - (मानवतावादी दृष्टिकोण) इतिहास और कल्पना का समन्वय,

प्रेमचन्द युगीन कहानी और अन्य कहानीकार

ग्रामीण परिवेश का आधिक्य, किसान एवं दलित जीवन, मजदूर वर्ग, सामाजिक विसंगतियों का उल्लेख आदि ।

(iii) प्रमुख उपन्यास – प्रेमचंद पूर्व युग के उपन्यासकार – लाला श्रीनिवास, बालकृष्ण भट्ट, श्रद्धाराम फुल्लौरी, किशोरीलाल गोस्वामी, राधाकृष्णदास,

प्रेमचन्द युग के उपन्यासकार – प्रेमचन्द, शिवपूजन सहाय, ~~सियाराम~~ सियारामशरण गुप्त, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक,

प्रेमचन्दोत्तर युग के उपन्यासकार – उपेन्द्रनाथ अश्क, भगवती चरण वर्मा, विष्णु प्रभाकर, पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, यशपाल, रेणु, इलाचन्द्र जोशी, मोहन राकेश, राजकमल चौधरी, श्रीलाल शुक्ल, महेन्द्र भल्ला, भीष्म साहनी, मन्नु भण्डारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, प्रभा खेतान, मनोहरश्याम जोशी, सुरेन्द्र वर्मा, वीरेन्द्र जैन, चित्रा मुद्गल आदि ।

(iv). सन्दर्भ एवं प्रसंग का उल्लेख –

- किसान की मनोवृत्ति –
- स्वार्थ और परमार्थ का चित्रण
- ~~विपरीत~~ विपरीत परिस्थितियों में किसान होरी की मनोवृत्ति का चित्रण आदि ।

(हस्ताक्षर)

डॉ. रमेश कुमार गोहे
सहा. प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
गु. घा. वि. वि. बिलासपुर (छ. ग.)

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय

मुख्य परीक्षा - 2014-15

प्रतिदर्श उत्तर-पत्र

AV-6695

B.A. (Hon's) fifth semester Exam. 2014

[हिंदी नाटक एवं एकांकी (502)]

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए - 10x2 = 20

(i) प्रियंगु मंजरी

(ii) सामाजिक, प्रहसन, व्यंग्यात्मक एवं अन्य किसी भी प्रकार की नाट्य रूप जिसका संबंध इन बिन्दुओं से है।

(iii) कोर्ट मार्शल

(iv) एकांकी

(v) धर्मवीर भारती

(vi) सुरेन्द्र वर्मा

(vii) भीष्म साहनी

(viii) 1880

(ix) दुर्लभ बंधु, विद्यासुन्दरी इत्यादि

(x) 1958

② निम्नलिखित में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए :- 4x5 = 20

(i) एकांकी की परिभाषा

(v)
=> पाठ परिचय
=> रचनाकार परिचय
=> गद्यांश परिचय
=> प्रस्तुत कथन के वक्ता एवं प्रसंग का विवरण
=> प्रस्तुत पंक्ति का पाठ से संबंध
=> रचना का अपने वर्तमान से संबंध एवं महत्व

(iii) => नीली झील का परिचय
=> रचनाकार का परिचय
=> सारांश

(iv)
=> भारत दुर्दशा के रचनाकार का परिचय
=> रचना एवं रचनाकार का अपने समय और समाज में स्थान एवं महत्व
=> वर्तमान समय में पाठ का महत्व

(ii) => पाठ का परिचय
=> चरित्र का परिचय
=> चरित्र का संवाद से सामंजस्य
=> संवाद का समकालीनता से संबंध
=> निष्कर्ष

(3) निम्न में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें। 10x2 = 20

(i) => ~~आषाढ़~~ 'आषाढ़ का एक दिन' के लेखक एवं पाठ परिचय,
=> प्रमुख पुरुष पात्र, कालिदास, विलोम, निक्षेप, मातुल, दंतुल, अनुस्वार एवं अनुनासिक का उल्लेख करते हुए कालिदास, विलोम, मातुल निक्षेप आदि का पूर्ण परिचय एवं चरित्र चित्रण ...

(ii) => कोर्ट मार्शल का पाठ परिचय एवं रचनाकार परिचय

=> रंगमंच में उपयुक्त सामग्री

=> रंग निर्देशन

=> अभिनय की प्रमुख विशेषता

=> उपयुक्त ध्वनि संकेत एवं प्रकाश योजना

=> रंग संकेत की आवश्यकता

=> निष्कर्ष

(iii)

=> भुवनेश्वर का परिचय

=> भुवनेश्वर की प्रमुख रचनाएँ

=> साहित्य में इनके नाटकों का महत्व

=> हिंदी एकांकी विकास-यात्रा में भुवनेश्वर का स्थान

समाप्त

कृष्ण कुमार पासवान

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ,बिलासपुर,(छ.ग.).

विषम सेमेस्टर परीक्षा - 2014-15

माडल -उत्तर

हिन्दी विभाग

AU-6696

कक्षा –स्नातक- (5सेमेस्टर) विषय: छायावादोत्तर काव्य विषय कोड :- 503

क- कविता
ख- तीसरा सप्तक
ग- बीतल आधा फागुन,नब नचारी
घ– नागार्जुन
ङ- सतरंगे पंखों वाली
च- चाँद का मुंह टेढ़ा है
छ- कलकत्ता
ज- वज्रकीर्ति
झ- 1943
ञ- मुक्ति-प्रसंग

2. **खंड-(ख) व्याख्या**

(i)प्रस्तुत पद्य रामधारी सिंह दिनकर की प्रसिद्ध कृति 'कुरुक्षेत्र' से है.कविता के माध्यम से कवि न्याय और शांति को विश्लेषित करते हुए उसकी जरूरत को बतलाते हैं

(ii). प्रस्तुत पद्य अज्ञेय की प्रसिद्ध कविता 'असाध्य वीणा' से है.कविता के माध्यम से कवि परम्परा की धारावाहिकता को दिखलाते हैं.

(iii) प्रस्तुत पद्य नागार्जुन की प्रसिद्ध कविता 'बादल को घिरते देखा है' से है.कविता में नागार्जुन ने प्रकृति के विभिन्न रूपों का वर्णन किया है.

खंड-3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) छायावाद के वाद हिंदी साहित्य में जो समय आता है उसे प्रगतिवाद के नाम से जाना जाता है और इस धारा की कविता प्रगतिशील कविता के रूप में.इसकी मुख्य विशेषताओं में प्रकृति चित्रण स्थानियता,किसान-मजदूर जीवन के संघर्ष का चित्रण,शोषण के विरूद्ध आवाज आदि हैं.

(ii) परम्परा की धारावाहिकता के रूप में इस कविता की समीक्षा अपेक्षित है.

(iii) नागार्जुन की काव्यगत विशेषताओं को बतलाते हुए उनकी कविता में प्रकृति,लोकेल,राजनीतिक स्वर,पक्षधरता आदि बिन्दुओं का उल्लेख अपेक्षित है.

(iv) छायावाद के वाद हिंदी कविता के विकास को बतलाते हुए उनकी प्रमुख प्रवृतियों और कवियों का उल्लेख अपेक्षित है.प्रगतिवाद,प्रयोगवाद,नयी कविता को उसके ऐतिहासिक विकास-क्रम में दिखलाना आवश्यक है.

नीलेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक (अ०)
हिन्दी विभाग
गुरु घा० वि० वि०, बिलासपुर

15/12/2014

(1)

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

एम० ए० (प्रथम-सत्र) परीक्षा, 2014

विषय - हिन्दी

मॉडल - उत्तर

प्रश्न - पत्र = कथेतर गद्य विधाएँ

(AU - 6037)

प्रश्न = 1 - निम्नलिखित के उत्तर दीजिए :—

(क) आ० शुक्ल ने हिन्दी खड़ी बोली गद्य का आरम्भ गंग कवि की "चंद छंद बरनन की महिमा" नामक रचना से माना है।

(ख) "आधुनिक काल" नामकरण के साथ आधुनिकता जुड़ी हुई है। 'आधुनिकता' शब्द समय सापेक्ष है। आधुनिकता का सम्बन्ध वर्तमान से है। इसका रूप प्रत्येक युग में बदलता रहता है। विचारपरक अर्थ में "आधुनिकता" एक मिश्र धारणा है, जिसका निर्माण अनेक तत्वों से हुआ है। इनमें प्रथम आधारभूत तत्व है अपने देश काल के साथ जीवन्त एवं सचेतन सम्बन्ध।

(ग) "अशोक के फूल" निबन्ध में श्वेत फूल तांत्रिक क्रियाओं में सिद्धि प्रदान करने तथा लाल फूल स्मरवर्द्धक के प्रतीक रूप में बताया गया है।

(घ) आ० शुक्ल कृत निबन्ध "चिंतामणि भाग - 1 और 2" नामक रचना में संकलित हैं।

(ङ) महात्मा गाँधी कृत आत्मकथा का नाम "सत्य के मेरे प्रयोग है।

(च) कुबेरनाथ राय कृत दो निबन्धों के नाम है - (i) संस्कृति का शेषनाग (ii) रस आखेटक (iii) महाकवि की तर्जनी

ज- फोर्ट विलियम कॉलेज के प्रथम अध्यक्ष जॉन गिलक्राइस्ट थे।

क- नामवर सिंह कृत निबन्ध का नाम "व्यापकता एवं गहराई" है।

ग- सदल मिश्र द्वारा लिखित दो रचनाओं के नाम हैं- (i) नासिकेतो पाख्यान (ii) चंद्रावती (iii) अध्यात्म रामायण

(2)- संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :—

क- संदर्भ = "व्यापकता एवं गहराई" → लेखक नामवर सिंह

प्रसंग = वर्तमान युग मूलतः वैज्ञानिक एवं भौतिक है। मानवीय संवेदना सतही रह गया है, जिसके फलस्वरूप साहित्य सृजन में जटिलता बढ़ी है।

व्याख्या = वर्तमान युग में विज्ञान के विकास के कारण मानवजीवन की जटिलताएँ क्रमशः बढ़ती जा रही हैं। लेखक का विचार है कि इन अवस्थाओं से घबराने की जरूरत नहीं है बल्कि गंभीरता से विचार-मंथन की आवश्यकता है।

ख- संदर्भ = "कविता क्या है" → लेखक आ० रामचंद्र शुक्ल

प्रसंग = उपर्युक्त निबन्ध के "मनुष्यता की उच्च भूमि" उपशीर्षक से उद्धृत है। कविता मनुष्य को मनुष्यत्व की उच्च भाव-भूमि पर ले जाती है।

व्याख्या = शुक्ल जी का विचार है कि कविता मनुष्य को मनुष्यत्व प्रदान करती है और मनुष्य को उसके नैसर्गिक, स्वाभाविक रूप में ला खड़ा करती है, जहाँ समस्त चराचर के भाव उसके अपने भाव बन जाते हैं तथा स्वार्थी एवं संकुचित अहं का लोप हो जाता है अर्थात मनुष्य का व्यष्टिगत हृदय समष्टिगत हो जाता है।

ग- संदर्भ = 'पगडंडियों का जमाना" → लेखक हरिशंकर परसाई

व्याख्या = भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद के आधार पर व्यक्ति की

सिफारिश की चिट्ठी न हो, घूस देने के लिए पर्याप्त रुपये नहीं तब तक उसको जीवन में सफलता नहीं मिल सकती है।

(घ) हिन्दी गद्य के विकास में इंशा अल्ला खाँ के अवदानों के संदर्भ में उनके कृतित्व और व्यक्तित्व का परिचय के साथ-साथ भाषा के संदर्भ में इंशा का मत महत्वपूर्ण है।

3- निम्नलिखित में किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :—

(क) शिवप्रसाद सितारेहिन्द तथा राजा लक्ष्मण सिंह के भाषिक द्वन्द्व के संदर्भ में शिवप्रसाद सितारेहिन्द उर्दू-फारसी मिश्रित खड़ी बोली के पक्षधर थे, जबकि राजा लक्ष्मण सिंह संस्कृत-निष्ठ हिन्दी के के पक्षधर थे। इसी संदर्भ में इन दोनों की भाषिक नीतियों का उल्लेख इनकी रचनाओं को लेते हुए दिखाना है।

(ख) 'निबन्ध' शब्द के अर्थ और परिभाषा को स्पष्ट करते हुए उसका स्वरूप और विकास भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग में दिखलाना है।

(ग) आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्धों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियां (i) विवेचन शैली (ii) वर्णनात्मक शैली (iii) प्रसाद शैली (iv) व्यंग्य शैली (v) प्रवाह शैली

"अशोक के फूल" एक चर्चित निबन्ध है, इसके आलोक में निबन्ध की वस्तुगत तथा शिल्पगत विशेषताएँ लिखनी है।

मॉडल - उत्तर (AU - 6038)

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

एम० ए० (प्रथम - सत्र) परीक्षा, 2014

विषय : हिन्दी साहित्य प्रश्न-पत्र [भाषा-विज्ञान : 703]

प्रश्न 1 → प्रथम प्रश्न अनिवार्य है।

(i) 'अवधी' का प्राचीन नाम कोशल है था।

(ii) 'चँदायन' मुल्ला दाऊद की रचना है।

(iii) 'नाथ साहित्य' का प्रवर्तन गोरखनाथ ने किया।

(iv) 'प्रेम सागर' लल्लू लाल की रचना है।

(v) 'शौरसेनी अपभ्रंश' का तात्पर्य पश्चिमी हिन्दी से है।

(vi) संयुक्त स्वर में ए, ऐ, ओ, औ वर्ण हैं।

(vii) जो शब्द के अर्थ में परिवर्तन लाने की क्षमता रखती है। उसे स्वनिम कहते है।

(viii) 'अध्यक्ष' तत्सम शब्द है।

(ix) 'साहित्य दर्पण' के ग्रंथाकार आचार्य विश्वनाथ है।

(x) अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ प्रकार है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

2. * सिद्ध साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप
* नाथ साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप
* बुंदेली साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप
* संत साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

3. मानक भाषा किसी भाषा के उस रूप को कहते हैं, जिसे उस भाषा के पूरे प्रदेश का शिक्षित वर्ग उस भाषा का शुद्ध रूप मानता है।
मानकीकरण के तीन चरण है कोडीकरण, विस्तारीकरण और शैलीकरण।
* भाषा का मानकीकरण वर्तनी के आधार पर
* शब्द - भंडार के आधार पर
* रूप रचना के आधार पर
* वाक्य रचना के आधार पर
* अर्थ के आधार पर

4. हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ — खड़ी बोली, ब्रजभाषा, हरियाणी, बुन्देली, कन्नौजी, दक्खिनी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती, मालवी, कुमाँउनी आदि बोलियों का क्षेत्र भी लिखिए।

5. स्वर - स्वर उस ध्वनि को कहते हैं जिसका उच्चारण बिना किसी अन्य ध्वनि की सहायता के होता है। हिंदी भाषा में ग्यारह स्वर हैं जिन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।
* ह्रस्व (छोटे) या लघु या मूल स्वर :— अ, इ, उ, ऋ।
* दीर्घ या गुरु :— आ, ई, ऊ, ऋ।
* संयुक्त स्वर :— ए, ऐ, ओ, औ।

व्यंजन — जिनके उच्चारण के लिए अन्य ध्वनि (स्वर) की सहायता लेनी पड़ती है।
* अंतस्थ व्यंजन — य, र, ल, व।
* ऊष्म व्यंजन — श, ष, स, ह।
* वर्गीय या स्पर्श व्यंजन — क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

6. रूप संरचना * रूपिम की संकल्पना, रूपिम की परिभाषा
* शब्द और अर्थ का संबंध
* अर्थ का आधार

7. शब्द निर्माण की प्रक्रिया –

* शब्द ग्रहण
* नए शब्द का निर्माण
* देशी - विदेशी शब्दों के मेल से नए शब्द का निर्माण
* अंगीकरण
* अनुमूलन
* नवनिर्माण
* अनुवाद

8. अर्थादेश — आदेश का तात्पर्य है परिवर्तन। इस प्रक्रिया में अर्थ का विस्तार या संकोचन नहीं होता बल्कि पूर्ण परिवर्तन हो जाता है। 'असुर' शब्द का प्रयोग वैदिक युग में देवता के लिए था। किन्तु बाद में वह राक्षस का वाचक हो गया। अर्थादेश की दो स्थितियाँ है –

अर्थोत्कर्ष — यदि किसी शब्द का अर्थ आरम्भ में बुरा हो किन्तु बाद में अच्छा हो जाय। अर्थ का उत्कर्ष हो जाना अर्थात श्रेष्ठ हो जाना ही अर्थोत्कर्ष है। संस्कृत में मुग्ध शब्द से मूढ या मूर्ख का अर्थ लिया जाता था पर आज मुग्ध का अर्थ मोहित होना या प्रसन्न होना है।

अर्थापकर्ष — अच्छे अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द कुछ कारणों से बुरे अर्थ में प्रयुक्त होने लगता है। उसकी अर्थगत अवनति हो जाती है। महाराज का अर्थ है राजाओं में महान, पंडित का मूल अर्थ है विद्वान। लेकिन महाराज भोजन बनाने वाले पंडित को कहते हैं, पंडित ब्राह्मण जाति में उत्पन्न किसी भी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हो सकता है चाहे वह मूर्ख ही क्यों न हो।

AU – 6039

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय

मुख्य परीक्षा - 2014-15

प्रतिदर्श उत्तर - पत्र

M.A. (First Semester) Exam.

हिंदी साहित्य एवं अनुवाद विज्ञान

[हिंदी साहित्य का इतिहास (आरंभ से रीतिकाल)]

1. सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं — 10×2=20

(i) राम स्वरूप चतुर्वेदी

(ii) निर्गुण शाखा के संत काव्य धारा के

(iii) शिव के

(iv) आल्हा खण्ड

(v) पुष्पदंत

(vi) केशव दास

(vii) चंदबरदाई / चंदरबरदाई के पुत्र

(ix) छत्रशाल महराज

(x) बिहारी

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए - 4×5=20

(i) ⇒ साहित्य की परिभाषा

⇒ साहित्य का सामाजिक महत्व

⇒ साहित्य का स्थायी महत्व

(ii) => सूफी शब्द का परिचय

=> सूफी कवि का परिचयात्मक उल्लेख

=> सूफी काव्य का स्वरूप

=> प्रेम, ~~उदात्त~~ उदात्त, भक्ति आदि का सूफी काव्य में (महत्व)

(iii) => पृथ्वीराज रासो का सामान्य परिचय

=> पृथ्वीराज रासो की उपलब्ध प्रतियाँ

=> पृथ्वीराज-रासो के लेखक की प्रमाणिकता संबंधी मत

=> विभिन्न विद्वानों के विचार

=> निष्कर्ष

(iv) => बिहारी का परिचय

=> बिहारी का समय और प्रमुख कार्य

=> काव्य के रूप एवं उनकी विशेषता

=> निष्कर्ष

(v) => अष्टछाप शब्द का विवेचन

=> पुष्टिमार्ग का महत्व

=> सभी कवियों एवं काव्यों का परिचय

=> अष्टछाप की स्थापना का उद्देश्य

=> निष्कर्ष

P.T.O

(3.) निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें। 2×10 = 20

(i) => साहित्येतिहास की आवश्यकता

=> नामकरण एवं काल विभाजन की आवश्यकता

=> कृति, कर्ता, पद्धति और विषय का परिचय

=> इन आधारों का उदाहरण सहित उल्लेख

=> निष्कर्ष

(ii) => भाषा एवं साहित्य की परिभाषा

=> भाषा का महत्व

=> साहित्य का महत्व

=> साहित्य, भाषा, समाज और संस्कृति का संबंध

=> निष्कर्ष

(iii)

=> भक्ति शब्द का परिचय

=> भक्ति के उद्भव संबंधी विद्वानों का मत

=> भक्ति काल की समय-सीमा

=> भक्तिकाल के प्रमुख कवियों की लोक दृष्टि

=> लोक दृष्टि को पुष्ट करने वाली पंक्तियों का उदाहरण

=> निष्कर्ष

(समाप्त)

मॉडल उत्तर

विषय :- हिन्दी
प्रश्नपत्र - (भक्तिकाव्य 301)
प्रश्नपत्रकोड - AV-6044
परीक्षा :- एम.ए. तृतीय सेमेस्टर - 2014
शिक्षक - डॉ. रमेश कुमार गोहे

प्रश्न - I अतिलघुउत्तरीय प्रश्न

(1) हरिदासी सम्प्रदाय (2) नानकदेव (3) रविदास (रैदास) (4) सूरदास (5) नायिका (स्त्रीरूप)
(6) सूरदास (7) विरह (वियोगश्रृंगार) (8) कुंभनदास (9) आ० रामचन्द्र शुक्ल (10) अवधी

प्रश्न II दीर्घउत्तरीय प्रश्न

(1) भक्ति शब्द का अर्थ, भक्ति के उदय के कारण, भक्ति आंदोलन की परिस्थितियां → राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, भक्ति की उत्पत्ति के अन्य मत - डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, आ० शुक्ल, ग्रियर्सन आदि।

(2). प्रमुख वैष्णव सम्प्रदाय → श्रीसम्प्रदाय (विशिष्टाद्वैत) श्री रामानुजाचार्य, ब्रह्म सम्प्रदाय (द्वैतवाद) माध्वाचार्य, श्री विष्णुस्वामी सम्प्रदाय (शुद्धाद्वैतवाद) - श्री विष्णुस्वामी, द्वैताद्वैतवाद या भेदाभेदवाद - निम्बार्काचार्य सखी सम्प्रदाय (हरिदासी सम्प्रदाय) - स्वामी हरिदास, शुद्धाद्वैत वाद (पुष्टिमार्ग) वल्लभाचार्य आदि।

(3) सूफी मत का दार्शनिक आधार → सूफी शब्द की उत्पत्ति, सूफी मत की मान्यताएँ, ईश्वर का स्वरूप, मानव का ईश्वर से सम्बन्ध, साधना के सोपान, ईश्वर साधना के पड़ाव, हाल की दशाओं के नाम, पूजा एवं तीर्थयात्रा, इश्क मजाजी और इश्क हकीकी आदि।

(4) रामकाव्य → रामभक्ति परम्परा के प्रमुख कवि एवं उनकी प्रमुख कृतियाँ, रामकाव्य का विकास, रामका स्वरूप, भक्ति का स्वरूप, समन्वयवादी प्रवृत्ति, मूल्यबोध एवं युगबोध, नारीविषयक दृष्टिकोण, प्रबंधरचना की प्रवृत्ति विविधकाव्य शैलियां, रामकाव्य में रस विधान, अवधी भाषा का प्रयोग, छन्द एवं रस अलंकार योजना आदि।

(5). तुलसी का महत्व, तुलसी की रचनाओं का सामाजिक महत्व तुलसी के काव्य का मूल्यांकन, रामचरित मानस का लोकमंगल, आदि।

व्याख्या I (6) - पद - कबीर, सन्दर्भ एवं प्रसंग, व्याख्या के प्रमुख अंग - गुरु का महत्व, संसार की निरर्थकता, रहस्यवाद, गुरु कृपा से भवसागर तरना आदि।

II (7) - पद - जायसी (पद्मावत) नागमती वियोग खंड - सन्दर्भ एवं प्रसंग, व्याख्या के प्रमुख अंग - नागमती के द्वारा पति रत्नसेन (राजा) का चित्तौड़ के पथ पर खड़ी रहकर लगातार इंतजार करना, विरह वर्णन, पूर्व के प्रचलित (कालरूपी) उदाहरण का वर्णन, मूसा को काल रूप बताना, नारायण का वामन अवतार इन्द्र का ब्राह्मण अवतार जालन्दर नाथ का वर्णन, गरुड़ आदि का वर्णन करना।

III (8) - पद - कबीर, गुरुकृपा (महिमा) से ईश्वर की प्राप्ति होना।, ईश्वर को प्रसन्न करना, सांसारिक बिम्ब-प्रतीक, योजना, ईश्वर को प्रिय या पति के रूप में देखना, रहस्यवाद आदि।

— x —

AV.6045

01

गुरुघासीदास विश्वविद्यालय ,बिलासपुर,(छ.ग.)

प्रतिदर्श उत्तर-पत्र - 2014-15

हिन्दी विभाग

कक्षा –एम.ए. (iii सेमेस्टर) विषय :- जनसंचार माध्यम विषय कोड :-302

उत्तर-1 - **(खंड -क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न**

क -"खींचो न कमानों को न तलवार उठाओ जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो"-यह प्रसिद्द शेर अकबर इलाहाबादी का है |

ख -"उदन्त मार्तंड' के प्रथम संपादक का नाम जुगल किशोर शुक्ल था ||

ग- राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद बनारस अखबार के संपादक थे |

घ- 'सरस्वती' का प्रकाशन पहले काशी से बाद में इलाहबाद से होता था |

ड- "आठ मॉस बीते जजमान, अबतो करो दक्षिणा दान"-कहकर पत्र के लिए प्रताप नारायण मिश्र जी चंदा मांगते थे|

च- -महावीर पसाद द्विवेदी के ठीक पूर्व 'सरस्वती' के संपादक श्याम सुन्दरदास जी थे |

छ- -पंडित मदन मोहन मालवीय के साहित्यिक पत्र का नाम अभ्युदय था|

ज- -''बालाबोधिनी'' |

झ- -गांधी जी के 'हरिजन' पत्र का इसके पहले ''हिन्दी नवजीवन'' नाम था |

ञ- छायावादी कवि सुमित्रा नंदन पन्त 'रूपाभ' के संपादक थे |

(खंड-ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर -2-प्रसारण-प्रक्रिया का विस्तार से परिचय देते समय सूचना-संकलन और समाचार-निर्माण की प्रक्रिया को समझान तथा सूचना और प्रसारण-तंत्र के तत्वों जैसे प्रेस ,रेडियों टेली-विज़न,इंटरनेट आदि का परिचय प्रस्तुत करने के साथ-साथ सन्देश,सूचना,घटनाओं तथा समाचारों के प्रस्तुतीकरण को उत्तर में समझाना आवश्यक होगा |

उत्तर -3-'पटकथा-लेखन के तत्वों का परिचय देने के क्रम में पटकथा के परिचय,पटकथा-लेखन के तत्वों तथा इसकी लेखन-प्रक्रिया और उसकी विशेषताओं का उल्लेख प्रश्न के उत्तर में अपेक्षित है |

उत्तर -4 जन-संचार के तत्वों के रूप में प्रिंट-मीडिया और इलेक्ट्रोनिक-मीडिया दोनों का परिचय देना और समाचार-पत्र,उसके लेखन,प्रस्तुतीकरण,प्रकाशन तथा समाचार-संकलन जैसे सभी तत्वों का परिचय प्रस्तुत करना उत्तर में आवश्यक है |

उत्तर -5- इस प्रश्न के उत्तर में 'भूमंडलीकरण' का अर्थ उसकी परिभाषा तथा समाज में इसकी व्याप्ति को व्याख्यायित करना आवश्यक है विश्व-ग्राम के भावबोध को समेटे इस परिकल्पना की तमाम व्यंजनाओं को समझाने के साथ-साथ विश्व-बाजार तथा बाजारवाद से इसके सीधे जुडाव को व्याख्यायित करना उत्तर में अपेक्षित है |

उत्तर -6- पारंपरिक जनसंचार माध्यमों के रूप में प्रिंट मीडिया जैसे-समाचर-पत्र ,पत्रिका पुस्तक सूचना पत्र आदि और इलेक्ट्रोनिक मीडिया जैसे-रेडियों टेलिविज़न इंटरनेट मोबाईल-फोन आदि का मीडिया के रूप में उपयोग औरइसकी आवश्यकताओं को व्याख्यायित करते हुए समाज में इसके महत्त्व का उत्तर में उल्लेख करना आवश्यक है|

(खंड-ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न नोट

उत्तर -7– 'उत्तर-संरचनावाद' को समझाते हुए मीडिया-अध्ययन की एक प्रविधि के रूप में इसके महत्त्व को विस्तार से व्याख्यायित करने की अपेक्षा इस प्रश्न के उत्तर से है |

उत्तर -8- हिन्दी-पत्रकारिता में भारतेंदु हरिश्चंद्र का योगदान स्पष्ट करते समय उनके विविध पत्रों जैसे हरिश्चंद्र

मगज़ीन,बाला-बोधिनी,कविवचन सुधा के सामाजिक महत्त्व तथा इनके संपादक के पीछे की उनकी दूरदर्शिता को व्याख्यायित करते हुए इस क्षेत्र में उनके योगदान को रेखांकित करना प्रश्न के उत्तर में अपेक्षित है |

उत्तर -9-'समाचार-लेखन एक कला है इसके शिल्प और शैलीगत बदलाव अपने विकास के क्रम में उत्तरोत्तर विशे और आकर्शक होते जा रहे हैं |समाचार लेखन की विशेषताओं के आधार पर इसके लेखन शैली के विशेषताओं को पहचाना जा सकता है अतः इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए इसके लेखन-प्रविधियों की व्याख्या प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर में अपेक्षित है |

उत्तर -10- फीचर और आलेख दोनों का परिचय देते हुए निम्न लिखित विशेषताओं को उत्तर में समाहित करना आवश्यक है| **फीचर-लेखन -** सरलता,अलंकारिकता,मुहावरे कहावतो लोकोक्तियों का प्रयोग, शब्द शक्तियों की वक्रता, साहित्यिक पुट लिए हुए ओजपूर्ण भाषा का प्रयोग, तथा सुगठित अनुच्छेदों और वाक्यों में कथन का विशेष तारतम्य होना चाहिए आदि | **आलेख-लेखन -** ज्ञान- वर्धक,सार्थक-लघु- रूप, विषय-वस्तु सापेक्षता, सजीवता, विचार,अर्थ और तथ्य-पूर्णता,अलंकार तथा लक्षणा-व्यंजना जैसी साहित्यिक विशेषताओं से रहित,होना आलेख लेखन के लिए आवश्यक है | |

डॉ.राजेश मिश्र
सहायक प्राध्यापक (अस्थाई)

AU- 6047

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

एम० ए० - (तृतीय सेमेस्टर) मुख्य परीक्षा - 2014

मॉडल उत्तर पत्र

हिन्दी (आधुनिक भारतीय साहित्य)

प्रश्न पत्र (304)

A. सभी प्रश्नों के उत्तर लिखिए :—

(i) कुर्रतुल एन हैदर को ऐनी आपा के नाम से जाना जाता है।

(ii) "संस्कार" उपन्यास को आधार लेकर कन्नड़ भाषा में फिल्म बनी थी और नायिका का किरदार स्नेहलता रेड्डी ने निभाया था।

(iii) "मालेर" शब्द का अर्थ है- ब्राह्मणों की निम्न जाति जो कि कुलीन ब्राह्मणों और उनकी अविवाहिता रखैलों से पैदा होती है। समाज प्रायः इनके प्रति सद्भाव नहीं रखता।

(iv) "गोरा" का अर्थ - गोरे रंग तथा गौरांग चैतन्य महाप्रभु से है।

(v) रवीन्द्रनाथ टैगोर

(vi) शरण कुमार लिम्बाले

(vii) मयाप्पा

(viii) सूर्य नारायणशर्मा

(ix) प्राण, अभिमान, मुक्ति, भारत तीर्थ इत्यादि।

(x) माटी मटाल

B. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर दीजिए:—

(i) भारतीय समाज बहुभाषिक है। और आपसी मतभेदों को दूर करने तथा राष्ट्रीय, एकता को बनाये रखने में अनुवाद महत्वपूर्ण

का कार्य करता है।

(2) कन्नड़ साहित्य का उद्भव, विकास, आधुनिक काल → प्रथम अवस्था 19 सदी का उत्तरार्द्ध, सन 1900 - 1920 का काल, सन 1920 के बाद कन्नड़ साहित्य, सन 1939 के बाद कन्नड़ साहित्य।

(3) संदर्भ सहितव्याख्या :—

4 जुलाई 1910 में रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा लिखित कविता "अपमानित" (गीतांजली में संकलित) । मान - अपमान, की रूकावट, रंगरूप, जातिगत भेद को दूर कर सबको एकताबद्ध होने का कवि का लक्ष्य है।

(4) संदर्भ, प्रसंग, अक्करमाशी उपन्यास (दलित आत्मकथा), लेखक शरण कुमार लिंबाले, मर्यादा के नाम पर स्त्री का शोषण, मसा माँ जो कि परित्यक्ता दलित स्त्री है।म शोषण का शिकार होती है।

(C) - निम्नलिखित प्रश्नों में से दो के उत्तर दें :—

(1) समाज की निगाह में अमान्य सम्बन्धों से जन्मी संतान को मराठी में अक्करमाशी कहते हैं। समाज में दलित, अछूत कहे जाने वाले, शोषित - पीड़ित तबके के लोगों की तकलीफ को बहुत संजीदगी और गहराई से बयां किया गया है।

(2) "गोरा" उपन्यास में गोरा जब तक अपने जन्म से जुड़ी सच्चाईयों को नहीं जानता है तब तक कट्टरता से हिन्दू धर्म का नसिर्फ पालन करता है, बल्कि उसका प्रचार - प्रसार भी करता है। लेकिन जैसे ही सच को जान लेता है स्वीकार करता है कि "माँ तुम्हीं मेरी माँ हो"। जिस माँ को मैं खोजता रहा,

तुम्हें विचार नहीं, घृणा नहीं, तुम केवल कल्याण की मूर्ति हो, तुम्हीं मेरा भारतवर्ष हो।" वह जाति के बंधन से मुक्त हो जाता है।

(3) विभिन्न भारतीय भाषाओं के मध्य प्रमुख समानताएँ—

हिन्दी, बंगला, उड़िया, सिंधी, कश्मीरी, पंजाबी, गुजराती तमिल, कन्नड़, मलयालम, संस्कृत इत्यादि भाषाओं के मध्य उद्गम, विकास और स्वरूप को देखते हुए तुलनात्मक रूप में साम्य-वैषम्य को बतलाना है।

Tiwary
शिक्षक - डॉ० वन्दना तिवारी